वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बौद्ध दर्शन द्वारा प्रतिपादित मूल्य मीमांसा के संदर्भ में मानवतावाद एवं शैक्षिक संकल्पनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन

आई0आई0एम0टी, विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0)

को

शिक्षा संकाय के अन्तर्गत
शिक्षाशास्त्र में पी0एच0डी
की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबंध की संक्षिप्त रूपरेखा
वर्ष -2019

शोध पर्यवेक्षक
डॉ0 रेनु गोयल
एसोसिएट प्रोफेसर
एम0एस0सी0, एम0एड0,
पी0एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र)

शोधार्थिनी
शशि कुमारी वर्मा
नामांकन
सं0–IIMTU/4202

–ःशोध केन्द्रः–
कॉलेज ऑफ एजुकेशन
आई0आई0एम0टी0, विश्वविद्यालय मेरठ (उ0प्र0)

विषय सूची

- प्रस्तावना
- समस्यात्मक कथन
- अध्ययन का उद्देश्य
- बौद्ध–दर्शन में समन्वित अवधारणाएं
- साहित्य सर्वेक्षण
- शोध विधि
- शोध सामग्री
- रुपरेखा का अध्यायवार विभाजन
- ग्रंथ सूची

प्रस्तावना

बौद्ध–द”ान के संस्थापक महात्मा बुद्ध माने जाते हैं। बुद्ध का जन्म ईसा की छठी शताब्दी पूर्व हुआ था। इनका जन्म हिमालय की तराई में स्थित कपिलवस्तु नामक स्थान के राजवं”ा में हुआ था। बुद्ध का बचपन का नाम सिद्धार्थ था। राजवं”ा में जन्म लेने के फलस्वरुप इनके जीवन को सुखमय बनाने के लिए पिता ने भिन्न–भिन्न प्रकार केआमोद–प्रमोद का प्रबंध किया ताकि सिद्धार्थ का मन वि”व की क्षणभंगुरताा तथा दुख की ओर आकर्षित न हो। पिता के हजार प्रयत्नों के बावजूद सिद्धार्थ का मन संसार की दुःखमय अवस्था की ओर जाने से न बच सका। कहा जाता है कि एक दिन घूमने के समय सिद्धार्थ ने एक रोगग्रस्त व्यक्ति, एक वृद्ध और श्म”ाान की ओर ले जाये जाते एक मृतक शरीर को देखा। इन दृ”यों का सिद्धार्थ के भावुक ह्दय पर अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ा। इन दृ”यों के बाद बुद्ध को यह समझने में देर न लगी कि संसार दुःखों के अधीन है। संसार के दुःखों को किस प्रकार दूर किया जाए यह चिन्ता निरन्तर बुद्ध को सताने लगी। दुःख के समाधान को ढूंढ़ने के लिए एक दिन वे आधी रात को अपनी पत्नी य”ाोधरा और नवजात f”ा”ाु राहुल को छोड़कर राजमहल से निकल पड़े तथा उन्होंने सन्यास को अपनाया। इस प्रकार पत्नी का प्रेम, पुत्र की महत्ता, महल का वैभव एवं विलास का आकर्षण सिद्धार्थ को संसारिकता की डोर में बांधने में असमर्थ साबित हुआ। विभिन्न प्रकार की यातनाएं झेलने के बाद उन्हें ज्ञान मिला। उन्हें जीवन के सत्य के द”ान हुए। तत्वज्ञान अर्थात बोधी प्राप्त कर लेने के बाद वे बुद्ध की संज्ञा से विभूषित किये गये। सत्य का ज्ञान प्राप्त हो जाने के बाद बुद्ध ने लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर अपने संदे”ाों को जनता तक पहुंचाने का संकल्प किया। इस उद्दे”य की पूर्ति के लिए उन्होंने घूम–घूमकर जनता को उपदे”ा देना आरम्भ किया। दुःख के कारणों और दुःख दूर करने के उपायों पर प्रका”ा डालते हुए उन्होंने दुःख से त्रस्त मानव को दुःख से छुटकारा पाने का आ”वासन दिया। बुद्ध के उपदे”ाों के फलस्वरूप बौद्ध धर्म एवं द”ान का विकास हुआ। बौद्ध धर्म सर्वप्रथम भारत में फैला और सबसे प्रमुख कारण उस समय प्रचलित धर्म के प्रति लोगों का असंतोष था। उस समय भारत में ब्राह्मण धर्म का बोलबाला था, जिसमें बलि प्रथा की प्रधानता थी। प”ाु यहां तक कि

मनुष्यों की भी बलि देने में किसी प्रकार का संकोच नहीं होता था। हिंसा के इस भयानक वातावरण में विकसित होने के कारण बौद्ध धर्म, जो अहिंसा पर आधारित था, भारत में लोकप्रिय होने का दावा कर सका। कुछ समय बाद यह धर्म भारत तक ही सीमित नहीं रहा दूसरे दे"ाों में भी फैला। इस प्रकार यह धर्म वि"व धर्म के रुप में प्रतिष्ठित हुआ। प्रत्येक दा"ानिक, कवि की तरह, अपने समय के प्रवृतियों से प्रभावित होता है। जिस समय बुद्ध का जन्म हुआ था उस समय मानव तत्व"ाात्र की समस्याओं को सुलझाने में निमग्न था। प्रत्येक व्यक्ति आत्मा, जगत और ई"वर जैसे विषयों के चिन्ता में डुबा हुआ था। जितने विचार थे, उतने मत हो गये थे। इस दा"ानिक प्रवृति का फल यह हुआ कि लोगों का नैतिक जीवन निष्प्राण हो रहा था। लोग जीवन के कर्त्तव्य को भूल रहे थे। वे संसार में रहकर भी संसार से कोसों दूर थे। नीति"ाास्त्र के नियमों के प्रति लोगों की आस्था उठने लगी थी। जिस प्रकार विचार क्षेत्र में पूरी अराजकता थी, उसी प्रकार नैतिक क्षेत्र में भी अराजकता थी। उस समय एक ऐसे व्यक्ति की आव"यकता थी जो लोगों को नैतिक जीवन की समस्याओं के प्रति जागरुक बनाने में सहायक हो। बुद्ध इस मांग की पूर्ति करने में पूर्ण रुप से सफल हुए। बुद्ध एक समाज सुधारक थे, दा"ानिक नहीं। दा"ानिक उसे कहा जाता है जो ई"वर, आत्मा, जगत जैसे विषयों का चिन्तन करता हो। जब हम बुद्ध की ि"ाक्षाओं का सिंहावलोकन करते हैं तो उसमें आचार–"ाास्त्र, मनोविज्ञान, तर्क"ाास्त्र आदि पाते हैं, परन्तु तत्व–द"ान का वहां पूर्णतः अभाव दिख पड़ताा है। उनसे जब भी कभी द"ान–"ाास्त्र से संबंधित कोई प्र"न पूछा जाता था तो वे मौन रहा करते थे। बुद्ध का द"ान तर्क"ाास्त्र के सजाल में फंसकर वाद–विवाद करते रहना नहीं था बल्कि जीवन की वास्तविक समस्याओं के प्रति सजग रहकर उनका समाधान ढ़ँढ़ना ही उनके द"ान का उद्दे"य था। इसीलिए बुद्ध ने उन शास्वत मूल्यों की तला"ा की जिससे जीवन सुखमय हो सके।जीवन की सुखमय स्थिति को पाने के लिए उन कारणों का पता लगाना अनिवार्य होता है जिनके कारण जीवन में दुख पैदा होता है। इसलिए बुद्ध के सारे उपदे"ा उनके चार आर्य सत्यों में निहित है, ये चा आर्य–सत्य इस प्रकार हैं –

1. संसार दुखों से परिपूर्ण है (There is Suffering)
2. दुखों का कारण भी है (There is cause of Suffering)
3. दुखों का अन्त सम्भव है (There is a cessation of Suffering)
4. दुखों के अन्त का मार्ग है (There is a way leading to the cessation of Suffering)

ये चार आर्य–सत्य ही बौद्ध धर्म के सार हैं। बुद्ध की समस्त ि"ाक्षाएँ किसी न किसी रुप में इन चार आर्य–सत्यों से प्रभावित हैं। इनके अभाव में बौद्ध–द"ान की कल्पना भी संभव नहीं है। इन्हीं चार आर्य–सत्यों अना"ाक्ति वासनाओं का ना"ा, दुःखों का अन्त, मानसिक शान्ति तथा निर्वाण सम्भव हो सकते हैं। इन चार आर्य–सत्यों पर अत्यधिक जोर देना बुद्ध के व्यवहारवाद का प्रमाण कहा जा सकता है।

बुद्ध का पहला आर्य–सत्य संसाार दुःखों से परिपूर्ण है। जन्म में दुःख, मृत्यु में दुःख, रोग में दुःख, अप्रिय से संयोग से दुःख आदि। दूसरा आर्य सत्य दुःखों का कारण भी है जिसे बुद्ध द"ान में प्रतीत्यसमुत्पाद की संज्ञा दी गई है। प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार प्रत्येक विषय का कुछ न कुछ कारण होता है, कोई भी घटना अकारण उपस्थित नहीं हो सकती है। तीसरा आर्य– सत्य दुःखों का अन्त संभव है। यदि दुःख के कारण का अन्त हो जाए तो दुः का अन्त संभव है। जब कारण का अभाव होगा तो कार्य की उत्पति कैसे होगी। जिसमें दुःखों का अन्त होता है उसे दुःख निरोध की संज्ञा दी जाती है। दुख निरोध को बुद्ध ने निर्वाण कहा है। चतुर्थ आर्य–सत्य दुःखों के अन्त का मार्ग है। बुद्ध ने चतुर्थ आर्य–सत्य में दुख–निरोध की अवस्था को दुख के कारण का अन्त होने का मार्ग कहा गया है। इस मार्ग को अष्टांगिक मार्ग के नाम से भी जाना जाता है। इन आठ अंगों का विवरण निम्न प्रकार से दिया जा सकता है :–

1. सम्यक् दृष्टि (Right View)
2. सम्यक् वाक् (Right Speech)

3. सम्यक् आजीविका (Right Livelihood)

4. सम्यक् कर्मान्त (Right Action)

5. सम्यक् संकल्प (Right Resolve)

6. सम्यक् व्यायाम (Right Efforts)

7. सम्यक् स्मृति (Right Mindfulness)

8. सम्यक् समाधि (Right Concentration)

जीवन की वास्तविक समस्याओं के प्रति बुद्ध ने पहली बार ध्यान दिलाया और उनके निराकरण के उपाय भी बताए। जीवन की समस्याएं किसी अदृ"य सत्ता के हाथ में नहीं है बल्कि सम्यक् विचार एवं अदृ"य चिन्तन से समस्याओं का समाधाान संभव है। बुद्ध ने उस शा"वत मूल्य की ओर ध्यानाकर्षण किया जहां मानव मात्र की समस्याओं का समाधान संभव है।

बुद्ध ने उन धार्मिक मान्यताओं पर गहरी चोट की जो मानवता के खिलाफ थीं। उन्होंने उस उच्चस्थ भाव करुणा की जागृति का संदे"ा दिया जो मनुष्य ही नहीं समस्त सृष्टि के लिए श्रेयस्कर है। बुद्ध ने निर्वाण को जीवन का उच्चस्थ मूल्य स्थाापित किया है।

मूल्य शब्द संस्कृत भाषा के मूल धातु में यत् प्रत्यय लगाने से बनताा है जिसका अर्थ ''उखाड़ देने योग्य'', ''मोल लेने योग्य'' इसी शब्द में ''त्यम्'' प्रत्यय जोड़ने से मूल्यम् शब्द निर्मित होता है जिसका अर्थ कीमत, लागत और मोल होता है। (वामन f"ावराम आप्टे, संस्कृत हिन्दी को"ा) को"ागत व्याख्या के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि ''मूल्य'' शब्द द्विआयामी अर्थ प्रकट करता है। पहला चेतना के परिप्रेक्ष्य में, दूसरा पदार्थ जगत के परिप्रेक्ष्य में। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मूल्य निरपेक्ष सत्ता नहीं है इसमें तीन कारक शामिल होते हैं। 1. समय, 2. व्यक्ति, 3. परिस्थिति या घटनाएं। किसी व्यक्ति के सामयिक परिस्थिति में उसके वि"वास में श्रद्धा के उच्च आद"ाों का प्रस्फुटन जब ऊँचाई प्राप्त करता है तो वह मूल्य का रुप धारण कर लेता है। अलग–अलग समय में अलग–अलग व्यक्तियों द्वारा मूल्य स्थापित किये जाते रहे हैं। भारत में प्राचीन समय से ही f"ावतत्व की प्राप्ति, निर्वाण की उपलब्धि तथा

मोक्ष की अवस्थिति को ही परम मूल्यों की श्रेणी में रखा गया है। वर्तमान समय में पदार्थ की कीमत उसकी गुणवत्ता के साथ मूल्यों का निर्धारण हो रहा है।

भारतीय इतिहास एवं द”ान के सन्दर्भ में महात्मा बुद्ध एक देदीप्यमान पुरुष की तरह अवतरित होते हैं। उन्होंने अपनी साधना और परिश्रम से एक ऐसी स्थिति प्राप्त की जो अनुपम और अप्रतिम है। उनको उस परम सत्य का अनुभव हुआ जिसको पाने के बाद मनुष्य के सभी दुखों का अन्त हो जाता है। जिसको बुद्ध ने निर्वाणा की संज्ञा से अभिभूषित किया। बुद्ध के इस परम अवस्था का अतुलनीय मूल्य स्थापित हुआ। इस उच्चस्थ मूल्य को पाने के बाद कुछ भी पाने को शेष नहीं रह जाता है। बुद्ध के इस मूल्य को पाने के बाद नवीन मानव का जन्म होता है, जो समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए श्रेयस्कर सिद्ध होता है। को”ागत अथ्र को ध्यान में रखकर कहा जाय तो यह मोल लेने के योग्य है।

जीवन द्विआयामी परिपथों का संयोग है, जिसमें पदार्थ और चेतना का अभिन्न सम्मिश्रण है। शरीर पदार्थ का और चेतना बुद्धि, अहंकार, मन और चित्त का अभिन्नसंयोजन है। इन दोनों आयामों के मूल्यों का निर्धारण उचित ढ़ंग से करने पर जीवनसुखमय और आनन्दित रहता है।

वर्तमान समय में विज्ञान की कृपा से पदार्थों पर अद्वितीय अन्वेषण हुआ है। ऐसा पूर्व में कभी नहीं हुआ था। इस कारण वर्तमान में पदार्थों का मूल्य ही सर्वोपरि हो गया, चेतना का मूल्य विघटित एवं विश्रृंखलित हो गया है जिसके कारण जीवन लय का विखण्डन हो गया है। बौद्ध द”ान इन दोनों आयामों के संयोजन की दृष्टि देता है जो उनके द”ान से स्पष्ट परिलक्षित होता है।

बुद्ध के स्थापित मूल्यों की तरह ही आधुनिक संदर्भ में मानवतावाद ने मानवीय समस्याओं के हल का प्रयास किया। विज्ञान, मार्क्सवाद तथा मनोवि”लेषणावाद के अतिरिक्त मानवतावाद ने भी उस सामान्य प्रचलित अर्थ में धर्म के विरुद्ध गंभीर चुनौती प्रस्तुत की है जिसके अनुसाार धर्म को ई”वर अथवा किसी अन्य अति प्राकृतिक शक्ति पर ही आधारित माना जाता है। अलौकिक या अतिप्राकृतिक शक्ति में आस्था धर्म का अनिवार्य मूलतत्व है जिसके बिना हम सामान्य अर्थ में उसे धर्म की संज्ञा नहीं दे सकते। यदि धर्म के अर्थ के विषय में

हमारी यह व्याख्या उचित है तो मानवतावाद को नि"चय ही धर्म के विरुद्ध एक गंभीर चुनौती माना जा सकता है क्योंकि इस विचारधारा में या किसी अन्य अतिप्राकृतिक शक्ति के लिए कोई स्थान नहीं है। इस संसार में निवास करने वाले मनुष्य पर केन्द्रित तथा उसी की सांसारिक समस्याओं से संबंधित मानवतावाद न तो किसी अलौकिक शक्ति के अस्तित्व को स्वीकार करता है और न इस जगत से पृथक परलोक के अस्तित्व को। उसके अनुसार अलौकिक सत्ताओं के रुप में ई"वर, देवता, आत्मा, स्वर्ग, नरक आदि सभी काल्पनिक विचार मात्र हैं जिनका वास्तविक अस्तित्व नहीं है। ऐसी स्थिति में यह कहना उचित न होगा कि केवल मनुष्य तथा प्राकृतिक जगत तक सीमित अपने इस दृष्टिकोण द्वारा मानवतावाद सामान्य अर्थ में धर्म का निषेधा करताहै। यहां इसी अर्थ में मानवतावाद को धर्म के विरुद्ध चुनौती के रुप में स्वीकार किया गया है।

जैसा कि ''मानवतावाद'' शब्द से स्पष्ट है, यह वह दा"ानिक विचारधारा है जिसमें मानव तथाा उसकी समस्याओं के विवेचन को सर्वाधिक महत्व दिया जाताा है। इस विचारधारा का केन्द्रबिन्दु ई"वर या कोई अन्य काल्पनिक दैवी शक्ति न होकर स्वयं मनुष्य ही है।

ऑक्सफोर्ड डिक्"ानरी के अनुसार, मानवतावाद ई"वर से संबंधित न होकर मनुष्य के हितों से संबंधित है। इसी प्रकार बाल्डविन की ''डिक्"ानरी ऑफ फिलोसॉफी एण्ड साइकोलॉजी'' में मानवतावाद की परिभाषा देते हुए कहा गया है कि ''यह विचार वि"वास अथवा कर्म संबंधी वह पद्धति है जो ई"वर का परित्याग करके मनुष्य तथा सांसारिक वस्तुओं पर ही केन्द्रित रहती है।'' मानवतावाद की इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि इसका उद्दे"य ई"वर अथवा किसी अन्य अलौकिक शक्ति के स्थान पर स्वयं मनुष्य तथा उसकी मूल समस्याओं का निष्क्ष वैज्ञानिक अध्ययन करना है। इस दा"ानिक विचारधारा के अन्तर्गत मनुष्य की उत्पत्ति, प्राकृतिक परिवे"ा में उसके विकास, ब्रह्माण्ड के साथ उसके संबंध, उसके व्यक्तित्व, स्वभााव तथा आचरण का निष्क्ष एवं वस्तुपरक वैज्ञानिक विधियों द्वारा अध्ययन किया जाता है।

प्रत्येक दा"ानिक विचारधारा के आधारभूत सिद्धान्तों के मुख्यतः तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। जिन्हें ज्ञान–मीमांसाा, तत्व–मीमांसा तथा आचार–मीमांसा कहा जाता है

मानवतावाद को भी इन्हीं सिद्धान्तों की विवेचना के आधार पर तीन वर्गों में विभक्त किया जायेगा। मानवतावाद की ज्ञान–मीमांसा मूलतः मानवीय अनुभव और तर्कबुद्धि पर ही आधारित है। इस विचारधारा के अनुसार जो कुछ मानवीय अनुभव एवं तर्कबुद्धि से परे है। वह मनुष्य के लिए अज्ञेय है, अतः उसके अस्तित्व तथा स्वरुप के विषय में वह नि"चयपूर्वक कुछ भी नहीं कह सकता। मानवतावादी व्यापक अर्थ में प्रत्यक्ष को ही मनुष्य के ज्ञाान का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और वि"वसनीय प्रमाण मानते हैं। वे अनुमान, शब्द आदि ज्ञान के अन्य प्रमाणों को केवल उसी सीमाा तक स्वीकार करते हैं जिस सीमा तक वे प्रमाण मूलतः प्रत्यक्ष पर ही आधारित रहते हैं। इसी कारण मानवतावाद की ज्ञान मीमांसा में मानवीय अनुभव, तर्कबुद्धि, विज्ञान तथा वैज्ञानिक विधियों का वि"ोष महत्व है। इस प्रकार मानवतावाद तर्कसंगत, अनुभवमूलक, ज्ञान–मीमांसा को ही स्वीकार करता है जिस पर सम्पूर्ण विज्ञान और उसकी विधियाँ आधारित है।

तत्व मीमांसा की दृष्टि से मानवतावाद मूलतः प्राकृतिक भौतिकवाद तथा निरी"वरवाद को ही स्वीकार करता है। इसके अनुसार ब्रह्माण्ड की अंतिम सत्ता ई"वर या कोई अतिप्राकृतिक शक्ति न होकर प्रकृति ही है जो निरन्तर परिवर्तन"ाील है। परमाणु तथा शक्ति इसी प्रकृति के रुप हैं जिन्हें हम भौतिक वस्तुओं, पेड़–पौधों और प्राणियों में देख सकते हैं। सभी भौतिक वस्तुओं पेड़–पौधे, प"ाु–पक्षी, मनुष्य तथा अन्य प्राणी इसी प्रकृति में सम्मिलित हैं। मानवतावाद के अनुसार यह प्रकृति स्वयंभू तथा स्वचालित है। ई"वर या अन्य दैवीय शक्तियों से इसका संचालन एवं नियमन नहीं होता है। अनुभव एवं तर्कबुद्धि द्वारा हम किसी अलौकिक या दैवीय शक्ति का अस्तित्व प्रमाणित नहीं कर सकते हैं। अतः ऐसी शक्ति में वि"वास करने के लिए हमाारे पास कोई तर्कसंगत या वैज्ञानिक आधार नहीं है।

जन्म और विकास की दृष्टि से मनुष्य अन्य प्राणियों से मूलतः भिन्न नहीं है किन्तु उसकी विकसित बुद्धि उसे अन्य प्राणियों से पृथक करती है। अपनी इसी बुद्धि के कारण उसने प्राणी जगत में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। मानवतावादियोां का मत है कि मन और चेतना मूलतः मनुष्य के मस्तिष्क पर ही निर्भर है उससे पृथक इनकी स्वतंत्र सत्ता नहीं है। इस प्रकार मानवतावाद की तत्व मीमांसाा मुलतः प्रकृतिवाद अथवा भौतिकवाद पर ही आधारित है।

ज्ञान मीमांसा और तत्व मीमांसा की भांति मानवतावाद की आधार मीमांसा में भी काल्पनिक अलौकिक शक्तियों के लिए कोई स्थान नहीं है। मानवतावाद इसी संसार मानव जीवन के लिए परम ध्येय के स्वरुप और उसकी प्राप्ति के उपायों के विषय में विचार करता है। उसकी यह स्पष्ट मान्यता है कि इस संसार में मनुष्य अपने भाग्य का निर्माणा स्वयं नहीं कर सकता है। ई"वर या कोई अन्य काल्पनिक–दैविक शक्ति इसमें उसकी कोई सहायता नहीं कर सकता है। अपनी जीवन के समस्याओं के समाधान के लिए मनुष्य को स्वयं अपनी तर्क बुद्धि पर ही निर्भर रहना चाहिए किसी अलौकिक शक्ति पर नहीं। मानवतावाद के अनुसार मनुष्य के जीवन का लक्ष्य स्वयं अपने कल्याण के साथ साथ सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण भी है जिसके लिए उसे यथासंभव प्रयास करना चाहिए। इस महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयास करते समय मनुष्य को किसी व्यक्ति की राष्ट्रीयता, जाति, उसके लिंग और धर्म पर विचार नहीं करना चाहिए। इन संकुचित परिधियों से उपर उठकर सम्पूर्ण मानव जाति की सर्वांगीण उन्नति के लिए प्रयास करना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक कर्त्तव्य है।

वस्तुतः अन्तर्राष्ट्रीयतावाद मानव भ्रातृत्व अथवा वि"व बंधुत्व ही मानवतावाद का मूल आद"ी है जिसकी प्राप्ति के लिए वह मनुष्य को प्रेरित करता है। वसुधैव कुटुम्बकम् इस प्राचीन भारतीय आद"ी पर आधारित मानवतावाद वि"व में प्रचलित सभी धर्मों की अपेक्षा कहीं अधिक उदार तथा व्यापक दृष्टि से मानव जीवन की समस्याओं पर विचार करता है। उसके अनुसार स्वतंत्रता, समानता, लोकतंत्र और वि"व शांति जैसे महान आद"ीों के अनुरुप आचरण ही सम्पूर्ण मानव जाति निरंतर प्रगति पथ पर ही अग्रसर हो सकती है। मनुष्य अपनी तर्क बुद्धि के द्वारा ही अपना विकास कर सकता है, किसी पर आश्रित रहकर नहीं। जीवन की सभी कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करने के लिए अपने ऊपर भरोसा करना होगा और अंधकार में अपने लिए स्वयं ही प्रका"ा की खोज करनीहोगी। मानवतावाद गौतम बुद्ध के इस उपदे"ा को पूर्णतः स्वीकार करता है कि ''आत्मदीपोभवः'' अर्थात तुम अपने प्रका"ा स्वयं बनो। इस प्रकार मानवतावाद की आधार मीमांसा मनुष्य को निरा"ा, भयभीत एवं परावलम्बी ना बनाकर उसे जीवन के प्रति

आ”ाावादी, निर्भय तथा स्वावलम्बी बनाती है और साथ ही सम्पूर्ण मानव जाति की सर्वांगीण उन्नति के लिए भी उसे प्रेरित करती है।

ऐतिहासिक संदर्भ में बुद्ध ने मानव जीवन की जिन मूलभूत आव”यकताओं की तरफ ध्यान आकर्षित किया था, आधुनिक संदर्भ में मानवतावाद ने भी उसी तरफ संकेत किया है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि मानवतावाद महात्मा बुद्ध के द”ान का आधुनिक रुपांतरण है। जिन मूल्यों और संकल्पनाओं का महात्मा बुद्ध ने वर्णन किया है उन्हीं संकल्पनाओं की पुनरावृत्ति मानवतावाद में स्पष्ट रुप से परिलक्षित हो रही है। जैसे– बुद्ध ने मनुष्य की समस्याओं के निराकरण के लिए चार आर्य सत्यों की संकल्पना दी है और तर्कबुद्धि द्वारा उनके समाधान का उपाय भी बताया है। बुद्ध ने कहा– जीवन दुःख है, दुःख का कारण अविद्या है और इस अविद्या का उपाय भी है जिससे जीवन सुखमय हो सकता है। इसी तरह मानवतावाद भी मनुष्य की समस्याओं का निराकरण तर्क की कसौटी पर कसकर वैज्ञानिक ढ़ंग से समाधान का रास्ता सुझाता है। बुद्ध ने समस्त मानवता के कल्याण के लिए अष्टांगिक मार्ग सुझाया और समस्त वि”व के कल्याण की कामना की। मानवतावाद भी वसुधैव कुटुम्बकम की संकल्पना के आधार पर ही वि”व शांति की कामना करता है। बुद्ध ने प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं समानता पर जोर दिया। मानवतावाद भी प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं समानता की वकालत करता है। बुद्ध ने आत्मदीपोभव के द्वारा स्वयं की समस्याओं के समाधान का रास्ता सुझाया। मानवतावाद भी स्वावलम्बन का मार्ग सुझाता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि बौद्ध द”ान द्वारा प्रतिपादित मूल्य किसी–न–किसी रुप में मानवतावाद में स्पष्ट रुप में दिखाई देते हैं।

बौद्ध द”ान न तो केवल भौतिकवादी है और न केवल आध्यात्मिक। इसने मध्यममार्ग को अपनाया है। इसकी ि”ाक्षा में मनुष्य के दुःखों का मूल कारण अविद्या है। एक ि”ाक्षा द”ान के रुप में बौद्ध द”ान ने समस्त जनमानस को प्रभावित किया। ि”ाक्षा प्रक्रिया के स्वरुप की चर्चा करने में बौद्ध दा”ानिकों ने रुचि नहीं ली बल्कि ि”ाक्षा के मूल कार्य मनुष्य के दुखों का निराकरण का मार्ग सुझाया। बौद्ध ि”ाक्षा लौकिक, परलौकिक तथा नैतिक स्तरों पर शैक्षिक संकल्पना प्रस्तुत करती है। आधुनिक संदर्भ में शैक्षिक संकल्पना के मूल स्तम्भ के रुप में कुछ

सम्प्रत्ययों की चर्चा की जा सकती है। जैसे– ि"ाक्षा का उद्दे"य, ि"ाक्षा की पाठ्यचर्चा, ि"ाक्षण विधियां, ि"ाक्षक–ि"ाक्षार्थी एवं अनु"ाासन। इन संप्रत्ययों के आलोक में बौद्ध द"र्ान की शैक्षिक संकल्पनाओं का मूल्यांकन किया जा सकता है। बौद्ध द"र्ान के ि"ाक्षा का उद्दे"य मनुष्य के दुखों का निवारण, ि"ाक्षा की पाठ्यचर्चा, शारीरिक एवं आत्मिक दोनोां का विकास और ि"ाक्षण विधियों में स्वाध्याय, मनन और चिन्तन तथा सामूहिक ि"ाक्षण के लिए विकसित व्याख्यान विधियों का उपयोग किया गया है। बौद्धों की अनु"ाासन संबंधी अवधारणा में अहिंसा, सत्य, चोरी नहीं करना, झूठ नहीं बोलना, गुरु का आदर करना, समस्त मनुष्य के कल्याण के बारे में सोचना, का बड़ी कठिनाई से पालन करने पर जोर दिया गया।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि भारत में शैक्षिक प्र"ाासन, शैक्षिक संगठन, विद्यालयी एवं वि"वविद्यालयी ि"ाक्षा और समूह ि"ाक्षण की शुरुआत कर बौद्धों ने वर्तमान ि"ाक्षा की नींव रख दी थी। इसी के साथ उन्होंने जनि"ाक्षा, स्त्रीि"ाक्षा और व्यावसायिक ि"ाक्षा की भी नींव रख दी थी। इसलिए बौद्ध द"र्ान ने समस्त मानवता के कल्याण के लिए ठोस एवं धरातलीय शैक्षिक संकल्पना की नींव रखी।

समस्यात्मक कथन

प्रस्तुत शोध अध्ययन बौद्ध द"र्ान एवं उसकी मूल्यमीमांसा के संदर्भ में मानवतावाद का ि"ाक्षा के सम्प्रत्यों को आधार बनाते हुए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पुनर्व्याख्यायित करने का प्रयास है तथा इन दोनों संकल्पनाओं का जनसामान्य के कल्याण का वास्तविक हल खोजने का नवीन प्रयास है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का शीर्षक **''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बौद्ध दर्शन द्वारा प्रतिपादित मूल्यमीमांसा के संदर्भ में मानवतावाद एवं भौक्षणिक संकल्पनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन''** शोध विषय की मुख्य समस्या है।

अध्ययन का उद्देश्य

किसी भी विषय का मुख्य उद्दे"य सत्य तक पहुंचने एवं उसके वास्तविक स्वरुप को प्रकट करना होता है। इसी परिप्रेक्ष्य में शोध का विषय 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बौद्ध द"र्ान द्वारा प्रतिपादित मूल्यमीमांसा के संदर्भ में मानवतावाद एवं शैक्षणिक संकल्पनाओं का विवेचनात्मक

अध्ययन'' की जांच पड़ताल करते हुए उसके वास्तविक स्वरूप तक पहुंचना शोधार्थी का ध्येय है। प्रस्तुत शोध विषय में बौद्ध द"र्ान की स्थापित मूल्य मीमांसा के आधुनिक **'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बौद्ध दर्शन द्वारा प्रतिपादित मूल्यमीमांसा के संदर्भ में मानवतावाद एवं शैक्षणिक संकल्पनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन''** के संदर्भ में शैक्षिक संकल्पनाओं के साथ स्पष्ट रुप से परिभाषित एवं व्याख्यायित करना शोधार्थी का मुख्य उद्दे"य है।

साधारणतः शोध के तीन उद्दे"य हैं, सैद्धान्तिक, तथ्यात्मक तथा व्यावहारिक, शोध कार्य के दौरान नवीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता है, किसी नवीन व्यावहारिकता को प्रस्तुत किया जाता है।

अतः इसके निम्न उद्देश्य ह –

1. बौद्ध द"र्ान की समान जानकारी से लेकर दा"र्ानिक विवेचन की गहराई का अध्ययन करना।
2. बौद्ध द"र्ान द्वारा प्रतिपादित मूल्य मीमांसा के संदर्भ में अध्ययन करना।
3. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बौद्ध द"र्ान के द्वारा मानवतावाद एवं शैक्षिक संकल्पनाओं का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न/अवधारणाएँ

- मूल्य मीमांसा और मानवतावाद के मध्य संबंध है।
- बौद्ध द"र्ान में उल्लेखित मानवतावाद शैक्षिक विचारों को प्रभावित करते हैं।
- बौद्ध द"र्ान व्यवहारिक मूल्यों का वर्णन प्रदान करता है।
- बौद्ध द"र्ान द्वारा प्रतिपादित विचार f"k्षा एवं मूल्यों के स्वरुप को व्यवहारिक वि"लेषण प्रदान करता है।

<u>साहित्य सर्वेक्षण</u>

साहित्य सर्वेक्षण एक ऐसी विधा है जो वर्तमान कार्य को नवीन दि"ाा व द"ाा तक पहुँचाती है। पूर्व में किये गये कार्यों एवं उसमें समाहित ज्ञान का सम्यक् उपयोग की कला साहित्य सर्वेक्षण से ही आती है। इस विधा में अनुसंधानकर्त्ता पूर्व के कार्यों का अवलोकन और परीक्षण दोनों करता है तथा नवीन कार्यों का सृजन भी करता है। इस विधा से अनुसंधानकर्त्ता को संदर्भ सामग्री की प्राप्ति हो जाती है जिससे उसका समय व श्रम दोनों बच जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी विभिन्न साहित्यों का सहयोग लेते हुए अपने शोध कार्य को लक्ष्य तक पहुँचाता है। इन साहित्यों में पूर्व में किये गए शोध कार्य, पत्र–पत्रिकाएँ, समाचार–पत्र, इन्टरनेट, कार्यालयी अभिलेख का उपयोग प्राथमिक या द्वितीयक स्त्रोत के रुप में उपयोग में लाया जायेगा।

1. **तिवारी, राकेश चन्द्र** (1991) एजुकेशन इम्पिलिकेशन ऑफ बुद्धिस्ट फिलॉसफी, इलाहाबाद वि0 वि0.

निष्कष – चार आर्य सत्यों के आधार पर समस्या की समीक्षा की गई है। बौद्ध साहित्य के अनुसार
दुःखों का मूल कारण अज्ञानता है जिससे चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व निर्माण में बाधा आती है। ि"ाक्षा प्रजातांत्रिक वातावरण में होनी चाहिए एवं सह ि"ाक्षा को बढ़ावा देना चाहिए।

2. **सिंह, राजीव रंजन** (1999) महात्मा गौतम बुद्ध के शैक्षिक विचार और वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता, का"ाी हिन्दु वि0 वि0, वाराणसी।

निष्कष – प्रस्तुत लघु शोध प्रबंधन में महात्मा गौतम बुद्ध के द"ान पर आधारित बौद्ध ि"ाक्षा तथा वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता का वर्णन किया गया है।

3. **व्यास, सुधीर (2005)** बौद्ध कालीन शिक्षा में मानव मूल्य एवं मानवाधिकार तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता, डॉ0 वी0 आर0 अम्बेडकर, वि0 वि0 आगरा।

निष्कष – बौद्ध द"ान पर आधारित बौद्ध ि"ाक्षा में मानव मूल्य एवं मानवाधिकार तथा वर्तमान में इनकी प्रासंगिकता पर प्रकार डाला गया है।

4. **सक्सेना आर0** (2008) बौद्ध शिक्षा दर्शन में निहित मूल्य एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता।
5. **राजकमल** (14 अगस्त 2013) बौद्ध दर्शन के अष्टांगिक मार्ग।
6. **ज्ञान मंथन** (20 फरवरी 2017) महात्मा बुद्ध और बौद्ध धर्म।
7. **वेवलोग्राफी ऑफ महात्मा बुद्ध** (6 अगस्त 2017)।
8. **भारतीय दर्शन : बौद्ध दर्शन** : प्रतीत्यसमुत्पाद मोटीभेशन (5 फरवरी 2018)
9. **उपाध्याय बलदेव** : बौद्ध दर्शन संस्करण (2 अप्रैल 2019)।
10. **शतायु अनिरुद्ध जोशी** : गौतम बुद्ध का जीवन दर्शन वेवदुनिया।

शोध विधि

कार्य करने की विधि किसी भी कार्य को या उसकी गुणवत्ता को प्रभावित करता है। इसीलिए किसी भी कार्य को उसके लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए उचित विधियों का प्रयोग आव"यक होता है। प्रस्तुत शोध को सम्पन्न करने के लिए शोधार्थी ने ऐतिहासिक और दा"ानिक शोध विधि का उपयोग करते हुए अपने लक्ष्य तक पहुंचाने की कोि"ा करेगी।

शोध सामग्री

प्रस्तुत शोध में शोध सामग्री प्राथमिक स्त्रोत और गौण स्त्रोत से प्राप्त करेंगे।

<u>शोध हेतु अध्याय योजना</u>

प्रस्तुत शोध को व्यवस्थित एवं सुविधाजनक बनाने के लिए शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध का क्रमवार अध्याय विभाजन किया है जिससे विषय को समझने में आसानी हो। शोधार्थी ने प्रस्तावित शोध **''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बौद्ध दर्शन द्वारा प्रतिपादित मूल्यमीमांसा के संदर्भ में मानवतावाद एवं शैक्षिक संकल्पनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन''** जो इस प्रकार है :–

रूपरेखा का अध्यायवार विभाजन

क्रम सं0 अध्याय		प्रकरण
प्रथम अध्याय	1	**प्रस्तावना**
	1.1	शोध समस्या कथन
	1.1.2	शोध समस्या में प्रयुक्त प्रत्ययों का विवरण
	1.1.3	शोध अध्ययन के उद्देश्य
	1.1.4	शोध अवधारणा
	1.1.5	शोध अध्ययन का महत्व
	1.1.6	शोध की परिसीमन
द्वितीय अध्याय	2	**संबंधित साहित्य का अध्ययन**
	2.1.1	साहित्य सर्वेक्षण की उद्देश्य
	2.1.2	साहित्य सर्वेक्षण के महत्व
	2.1.3	साहित्य सर्वेक्षण का स्रोत
	2.1.4	भारतीय संदर्भ में शोध कार्य
	2.1.5	विदेश के संदर्भ में शोध कार्य
	2.1.6	शोध पत्र–पत्रिकाएँ
	2.1.7	सहायक पुस्तक ग्रंथ
तृतीय अध्याय	**3**	**शोध अध्ययन विधि**
	3.1.1	शोध विधि का स्वरूप
	3.1.2	शोध के प्रमुख सोपान
	3.1.3	शोध विधि का महत्व
	3.1.4	वर्तमान शोध में प्रयुक्त शोध विधि
	3.1.5	ऐतिहासिक शोध विधि
	3.1.6	दार्शनिक शोध विधि
	3.1.7	शोध प्रारूप
चतुर्थ अध्याय	4	**बौद्ध दर्शन का स्वरूप**
	4.1.1	बौद्ध दर्शन की विशेषताएँ
	4.1.2	बौद्ध दर्शन का दार्शनिक आधार
	4.1.3	बौद्ध दर्शन का विवेचना, मूल्य मीमांसा
पंचम् अध्याय	**5**	**मूल्य मीमांसा, मानवतावाद**

5.1.1 दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में मूल्य मीमांसा
5.1.2 बौद्ध दर्शन में मूल्य की समीक्षा
5.1.3 दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में मानवतावाद
5.1.4 बौद्ध दर्शन में मूल्य एवं मानवतावाद
5.1.5 बौद्ध दर्शन में मूल्य एवं मानवतावाद का अन्र्तसंबंध

षष्ठम् अध्याय 6 **बौद्ध दर्शन के मूल्य मोमांसा के परिपेक्ष्य में शैक्षिण संकल्पनाओं की विवेचना**

सप्तम् अध्याय 7 **वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बौद्ध दर्शन द्वारा प्रतिपादित मूल्य मीमांसा के सन्दर्भ में मानवतावाद एंव शैक्षिण संकल्पनाओ की समीक्षात्मक व्याख्यां एवं विमर्श**

8 **निष्कर्ष**

9 **भावी अध्ययन हेतु सुझाव**

- **सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**
- **पुस्ताकाल्य**
- **संग्रहाल्य**
- **पत्र–पत्रिकाएँ**
- **समाचार पत्र**

परिशिष्ट
- **दो प्रकाशित शोध पत्र**
- **सेमीनार प्रस्तुतीकरण के दो प्रमाण पत्र**

ग्रंथ सूची

लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक का नााम
हरेन्द्र प्रताप सिन्हा	भारतीय द”ार्न की रुपरेखा	मेतीलाल बनारसी दास
नन्द कि”ाोर देवराज	भारतीय द”ार्न	ऊ0 प्र0 हिन्दी ग्रंथ अकादमी
एम0 हिरयन्ना	भारतीय द”ार्न	ऊ0 प्र0 हि0
चन्द्रधर शर्मा	भारतीय द”ार्न	मेतीलाल बनारसी दास
वेद प्रका”ा वर्मा	धर्म द”ार्न की मूल समस्यााएँ	हिन्दी माध्यम क्रियान्वयन निदे”ाालय
वेद प्रका”ा वर्मा	नीति”ाास्त्र	हिन्दी माध्यम क्रियान्वयन निदे”ाालय
आर0 ए0 शर्मा	तत्व मीमांसा ज्ञान मीमांसा और मूल्य मीमांसा	आर0 लाल
लक्ष्मी नीधि शर्मा	धर्म द”ार्न की रुपरेखा	अभिव्यक्ति प्रका”ान
लाल एवं पलोड़	शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग	आर0 लाल
एल0 के0 ओढ़	ि”ाक्षा की दा”ार्निक पृष्ठभूमि	राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी

जरनल्स

- एपिग्राफिका इण्डिया
- जनरल ऑफ दि ग्रंथमाला इन रिसर्च इन्टीट्यूट
- जनरल ऑफ दि पोलिटेक्ट्स सोसायटी
- कल्याण, ि”क्षा वार्षिकांक

अंग्रेजी ग्रंथ

- अस्टेकर ए0 एस0 : एजुके”ान इन एसेण्ट इण्डिया
- बोधिचर्यावतार : बिविलयोंये का इण्डिया में प्रका”ित
- बुद्धचरित : अ”वघोष
- धम्मपद : बुद्ध एफ0 मैक्समूलर का अंग्रेजी अनुवाद
- गौतम धर्मसूत्र : आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रंथमाला में प्रका”ित।